श्री कुलेश्वर महादेव, शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा, जिला रायपुर (छ.ग.)

शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण

बस्तर के पर्यटन क्षेत्र (चित्रकुट जलप्रपात, तीरथगढ जलप्रपात, दंतेश्वरी मंदिर)

दिनांक 07.01.2024

प्रस्तुतकर्ता

श्री टीकेश्वर सिंह मरकाम,
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
श्री रमेश कुमार लहरे, सहायक
प्राध्यापक, राजनीनि विज्ञान
डॉ. खेमप्रभा, अतिथि व्याख्याता
श्री मनोहर दास जोशी, जनभागीदारी
शिक्षक
श्री रामेश्वर मण्डावी

Scanned with CamScanner

विषय वस्तु :–

1. प्रस्तावना :–
2. शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण
3. प्रस्थान एवं आगमन के समय का फोटो।
4. शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण स्थल :–
   (अ) चित्रकोट
   (ब) तीरथगढ
   (स) मां दंतेश्वरी मंदिर दंतेवाडा
5. तीरथगढ जलप्रपात का फोटो।
6. भ्रमण स्थल का फोटो।
7. आभार।

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना :—

शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण

हमें आज बस्तर शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण का यह अनुभव लिखते हुए बहुत खुशी हो रही है की दिनांक 06.01.2024 शाम को श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा जिला रायपुर के कक्षा बी.ए. भाग एक, दो, तीन के छात्र/छात्राओं के साथ महाविद्यालय प्रांगण से प्राचार्य श्री एस.आर.वड्डे के दिशा निर्देशन में एक दिवसीय शैक्षणिक/भौगोलिक भ्रमण के लिए बस्तर (चित्रकुट,तीरथगढ,दंतेवाडा) के लिए प्रस्थान किए छात्र/छात्राओं के साथ यह शैक्षणिक भ्रमण अलग ही अनुभव रहा छात्र/छात्राओं के चेहरे पर एक अलग खुशनुमा मुस्कान हर्षोल्लास दिखाई दे रहा था, जब हम महाविद्यालय से कुरूद,धमतरी,कांकेर से रात्रिकालिन प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ जब हम बारह भंवर केशकाल की घाटी पंहुचे उसकी प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रखरता देखते ही अद्वितीय स्मरणीय रहा, इस प्रकार से छात्र/छात्राएं बस में रात्रि के समय कोई उंघते, कोई प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुभव लेते हुए हसी–ठिठोली करते, कभी कभी अन्ताक्षरी खेलते एवं बाजे की धुन के साथ थिरकते हुए केशकाल, फरसगांव, कोण्डागांव और भानपुरी होते हुए प्रातः4 बजे बस्तर की पावन धरा चित्रकुट में हमारी टीम का पर्दापण हुआ, उस समय कोहरे के कारण चित्रकुट की धरा मानो ऐसा लग रहा था कि आकाश धरती पर उतर आई हो, साथ ही वहां की जगमगाती बिजली की प्रकाश टिमटिमाती चांदनी की तरह प्रतीत हो रही थी, चित्रकुट के रिसार्ट में पदापर्ण होते ही वो कुत्ता की आवाज और अंगेठी की आंच ने हमें प्रेमचन्द जी के कहानी ,,पूस की रात,, (1930) की याद दिला दी। इस तरह से अंगेठी की आंच का मजा लेते हुए कोहरा छटने का इतजार करते हुए चित्रकुट जलप्रपात के प्राकृतिक सौन्दर्य से रूबरू हुए तत्पश्चात हम केशलुर होते हुए कांगेर वेली अभ्यारण की सुन्दरता की मजा लेते हुए तीरथगढ में पहुंचे। तीरथगढ जलप्रपात की वो दूधिया जल की धारा कल कल की वो गर्जना और पक्षीयों की कलरव ने मन को मोह लिया ऐसा लगता है कि काश हम जलधारा, पक्षीयों के कलरव और पौधों के झुरमुट के बीच में खो जाएं फिर वहां से मां दंतेश्वरी की पावन भूमि दंतेवाडा में पहुंचकर मां दंतेश्वरी की दर्शन करने पर

Scanned with CamScanner

एक ऐसा शांति एवं आध्यात्मिकता का अनुभव हुआ की हमारे दिनभर की थकान ही दूर हो गया। रात्रि 10:00 बजे अपने गंतव्य स्थान की ओर प्रस्थान कर दिनांक 08.01.2024 को प्रातः 6.45 को महाविद्यालय में हम सभी का सकुशल आगमन हुआ जिसमे हमारे महाविद्यालय के अधिकारी/कर्मचारी (श्री टीकेश्वर सिंह मरकाम, श्री रमेश कुमार लहरे सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, श्री मनोहर दास जोशी अतिथि व्याख्याता हिन्दी , डॉ.खेमप्रभा अतिथि व्याख्याता, श्री रामेश्वर मण्डावी अतिथि व्याख्याता वाणिज्य) नेतृत्वकर्ता, मार्गदर्शक एवं पालक के रूप में उपस्थित थे। इस भौगोलिक भ्रमण में हमारे महाविद्यालय के छात्र 15/छात्रा 28 कुल 43 (अल्का सिन्हा, लक्ष्मी साहू, तारिणी निशाद, यामिनी साहू, हूमेन्द्र साहू, मधु साहू, दिनेश्वरी साहू, विद्या साहू, केश कुमार, योगेश तारक, नेहा साहू, भागवती निशाद, हर्स साहू, रोशनी साहू, भोजकुमारी चकधारी, विद्या साहू, रीमा सेन, दीपक सेन, रेणुका साहू, नेहा साहू, धात्री ध्रुव, द्विती देवांगन, पोखराज ध्रुव, यमन साहू, ओमप्रकाश साहू, मजु साहू, ममता साहू, पायल सोनी, मोनिका कंसारी, नीरा निशाद, जान्हवी देवांगन, सुनीता साहू, गजेन्द्र साहू, कुणाल यादव, राजकुमार साहू, त्रिभुवन साहू, इन्दू साहू, दिव्या साहू, मोहनी साहू)सम्मिलित थे।

दिनांक 06.01.2024 रात्रि को महाविद्यालय का प्रागण, शैक्षणिक भ्रमण में जाते हुए

Scanned with CamScanner

दिनांक 08.01.2024 प्रातः को महाविद्यालय का प्रागण, शैक्षणिक भ्रमण से वापस

शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण स्थल

चित्रकोट जलप्रपात

चित्रकोट जलप्रपात भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में इन्द्रावती नदी पर स्थित एक सुन्दर जलप्रपात है। इसकी ऊँचाई 90 फीट है। वहां के दूकानदारों से प्राप्त जानकारी के आधार

Scanned with CamScanner

पर कि वर्षा के दिनों में यह रक्त-लालिमा लिए हुए होता है, तो गर्मियों की चाँदनी रात में यह बिल्कुल सफेद दिखाई देता है। जगदलपुर से 40 कि.मी. और रायपुर से 273 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह जलप्रपात छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा, सबसे चौड़ा और सबसे ज्यादा जल की मात्रा प्रवाहित करने वाला जलप्रपात है। यह बस्तर संभाग का सबसे प्रमुख जलप्रपात माना जाता है। जगदलपुर से समीप होने के कारण यह एक प्रमुख पिकनिक स्थल के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। घोड़े की नाल के समान मुख के कारण इस जाल प्रपात को 'भारत का निआग्रा' भी कहा जाता है। सधन वृक्षों एवं विंध्य पर्वतमालाओं के मध्य स्थित इस जल प्रपात से गिरने वाली विशाल जलराशि पर्यटकों का मन मोह लेती है।चित्रकोट जलप्रपात के आसपास घने वन विराजमान हैं, जो कि उसकी प्राकृतिक सौंदर्यता को और बढ़ा देती है। रात में इस जगह को पूरा रोशनी के साथ जगमगाया जाता है। यहाँ के झरने से गिरते पानी के सौंदर्य को पर्यटक रोशनी के साथ देख सकते हैं। मानसून काल में इंद्रावती नदी अपने उफान पर होती है। चित्रकूट जलप्रपात भारत का सबसे चौड़ा प्रपात है। चित्रकोट जलप्रपात वैसे तो हर मौसम में दर्शनीय है, लेकिन बारिश के दिनों में इसे देखना अधिक रोमांचकारी अनुभव होता है। वर्षा में ऊंचाई से विशाल जलराशि की गर्जना रोमांच और सिहरन पैदा कर देती है।

एक विशालकाय शिवलिंग और महादेव का मंदिर भी है। जो हाल फिलहाल में ही बनाया गया है, चित्रकोट जलप्रपात की सुंदराता को करीब से निहारने के लिए यहां बोटिंग का आनंद भी ले सकते हैं। नदी में उतरकर 90 फीट की ऊंचाई से गिरते विशाल जलधारा को देखना और उसे महसूस करना थोड़ा डरावना जरूर, लेकिन उत्साह से भरपूर होता है। .

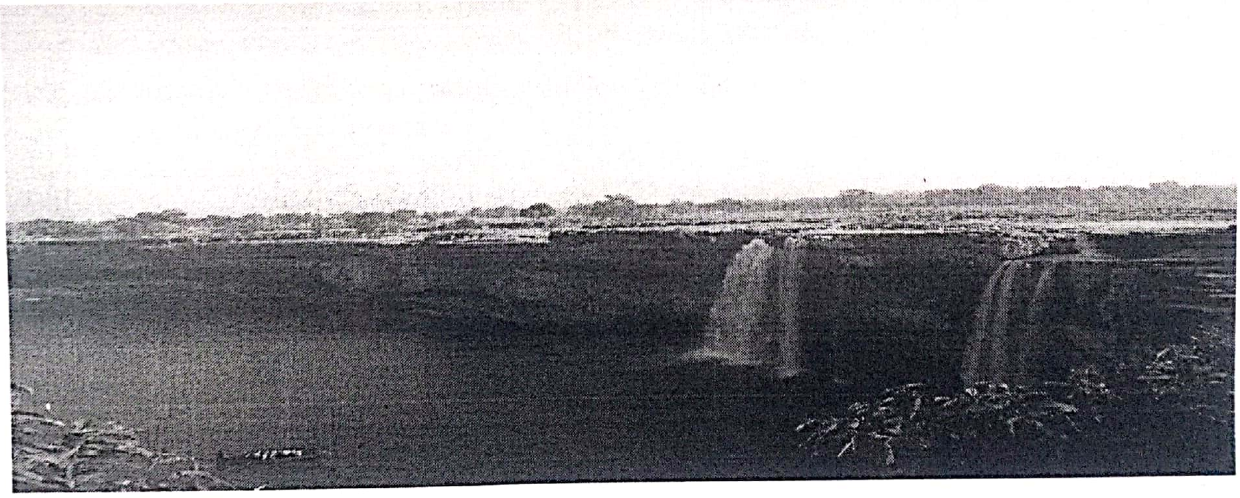

तीरथगढ जलप्रपात

यह जलप्रपात मुनगा बहार नदी पर स्थित है | यह नदी कांगेर घाटी नेशनल पार्क की प्रमुख नदी है, तीरथगढ़ जलप्रपात से 10 किलोमीटर

Scanned with CamScanner

दक्षिण पश्चिम दिशा में घनघोर जंगलों के बीच इस नदी का उद्गम स्थल है | यह नदी कांगेर घाटी नेशनल पार्क में कई झरनों का निर्माण करती है, उनमें से सबसे प्रमुख तीरथगढ़ जलप्रपात है,यह नदी वर्ष भर सदानीरा रहती है, चाहे आप किसी भी मौसम में आए आपको तीरथगढ़ जलप्रपात का सुंदर नजारा देखने को मिलेगा |

तीरथगढ़ जलप्रपात भी जरूर पहुंचता है। इसे अगर दूध का झरना भी कहा जाए तो गलत नहीं होगा। चित्रकोट से इसकी दूरी करीब 57 किलोमीटर है। तीरथगढ़ एक ऐसा वॉटरफाल है जहां दो नदियों का संगम भी होता है। दो सहायक नदियां मुनगा और बहार यहां एक होकर सैलानियों के लिए एक मनोरम दृश्य का निर्माण करती है। तीरथगढ़ में दरअसल एक नहीं, बल्कि दो-दो झरने है, जो एक के बाद एक पहाड़ों और घने जंगलों के बीच भू-भाग में गिरती है। मजे की बात तो ये यहां दोनों ही झरनों की खूबसूरती को बेहद करीब से निहार सकते हैं। घरे वृक्षों के बीच पहाड़ों पर बनी सीढ़ियों की मदद से आप गहरी खाई में भी उतर सकते हैं, जहां से मुनगा-बहार नदी के सफर की शुरूआत होती है। तीरथगढ़ जलप्रपात को भारत के सबसे ऊंचे वॉटरफाल्स में गिना जाता है। इसकी ऊंचाई करीब 300 फीट है। यहां प्रकृति की सुंदरता हर रूप में विराजमान है। जहां बस पर्यावरण में खो जाने का मन करता है। शांत माहौल में चिड़ियों की चहचहाहट, 300 फीट की ऊंचाई से गिरता झरना, खूबसूरती की मिसाल पेश करते हरे-भरे पेड़ और बरसाती बूंदों का गिले पत्तों से गिरना... ये सब कुछ आपको एक साथ तीरथगढ़ जल प्रपात में मिलेंगे

तीरथगढ जलप्रपात की विशेषताए –:

1. प्रकृति की गोद में बसा यह जलप्रपात अत्यंत सुंदर है |
2. तीरथगढ जलप्रपात तक पहुंच मार्ग अत्यंत सुलभ है |
3. जलप्रपात के नजदीक खाने-पीने की सारी सुविधाएं उपलब्ध है |
4. यह जलप्रपात प्रत्येक मौसम में खुला रहता है |
5. जलप्रपात को नीचे से निहारने के लिए उपयुक्त सीढ़ियां बनी हुई है |
6. जलप्रपात के नजदीक अन्य दर्शनीय स्थलों की भी भरमार है |
7. प्रत्येक मौसम में यह जलप्रपात दर्शनीय है |
8. यह जलप्रपात सीढी जैसी आकृति पर स्थित है |
9. इस जलप्रपात पर ऊपर से नीचे गिरता हुआ पानी ऐसा लगता है जैसे हजारों लीटर दूध गिर रहा है |

दिशा में तीरथगढ़ जलप्रपात का मार्ग जाता है, जो मुख्य मार्ग से लगभग 10 किलोमीटर अंदर स्थित है | मुख्य सड़क से दाएं और तीरथगढ़ वॉटरफॉल के लिए और बाएं और कुटुमसर गुफा के लिए मार्ग है इसके अलावा तीरथगढ़ वॉटरफॉल पहुंचने के लिए एक और मार्ग जगदलपुर के ब्लॉक दरभा से भी है | इसी नेशनल हाईवे क्रमांक 30 पर आगे बढ़ने पर लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर दरभा स्थित है, दरभा से लगभग 7 से 8 किलोमीटर दूरी पर यह जलप्रपात स्थित है

Scanned with CamScanner

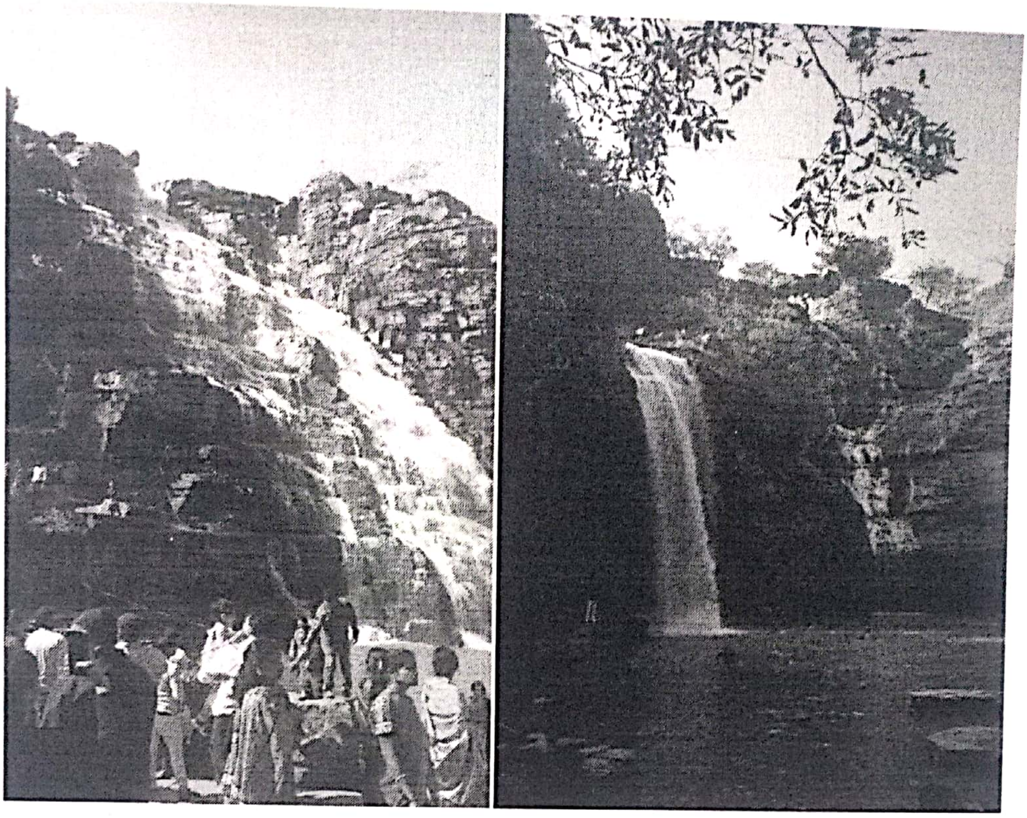

तीरथगढ जलप्रपात का मनोरम दृश्य

Scanned with CamScanner

दंतेवाडा मां दंतेश्वरी मंदिर

दन्तेश्वरी मन्दिर छत्तीसगढ़ के दन्तेवाड़ा में स्थित एक शक्तिपीठ है जो दन्तेश्वरी देवी को समर्पित है। इस मन्दिर का निर्माण १४वीं शताब्दी में हुआ था। दन्तेवाड़ा का नाम देवी दन्तेश्वरी के नाम पर ही पड़ा है जो काकतीय राजाओं की कुलदेवी हैं। परम्परागत रूप से देवी दन्तेश्वरी बस्तर राज्य की भी कुलदेवी हैं। दंतेवाड़ा, जगदलपुर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित, पवित्र नदियों शंखिनी और डकिनी के संगम पर, दोनों नदियों के अलग-अलग रंग हैं, यह छह सौ साल पुराना मंदिर प्राचीन में से एक है भारत के विरासत स्थल और बस्तर क्षेत्र के धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। विशाल मंदिर परिसर आज वास्तव में सदियों से इतिहास और परंपरा का एक खड़ा स्मारक है। अपनी समृद्ध वास्तुकला और मूर्तिकला धन और अपनी जीवंत त्योहार परंपराओं के साथ, दंतेश्वरी माई मंदिर इस क्षेत्र के लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

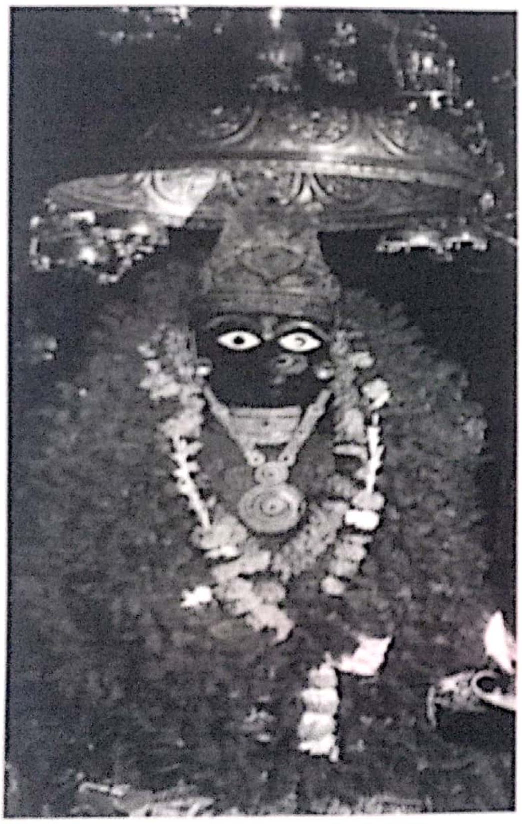

Scanned with CamScanner

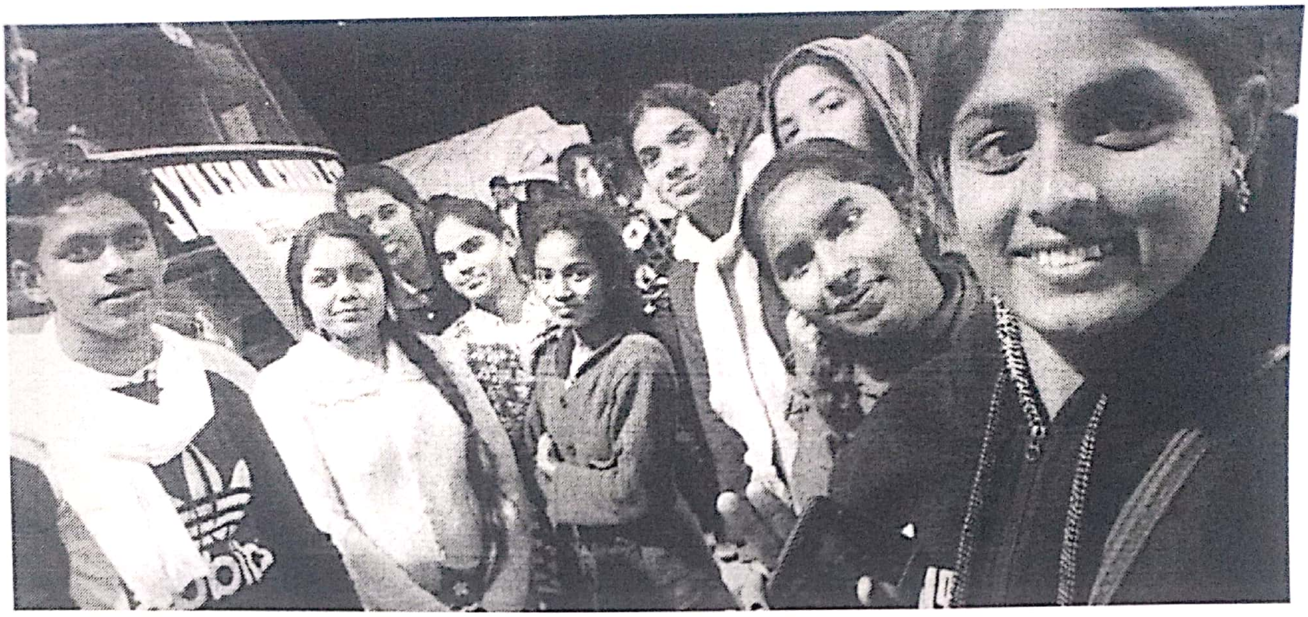

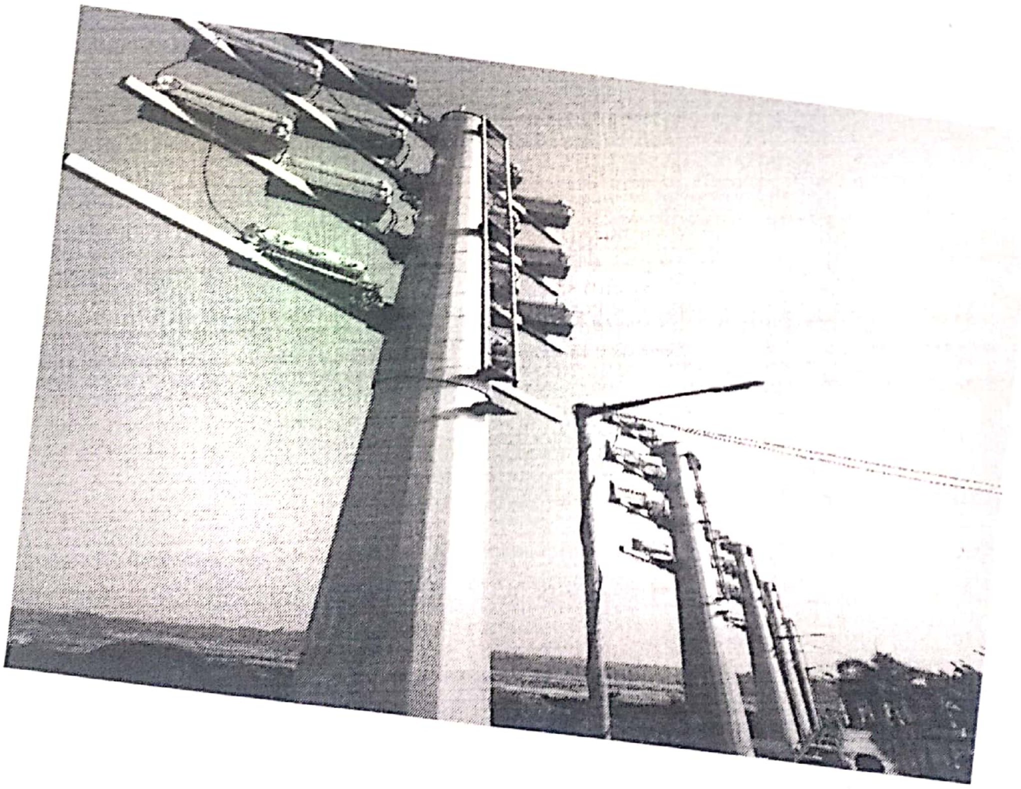

Scanned with CamScanner

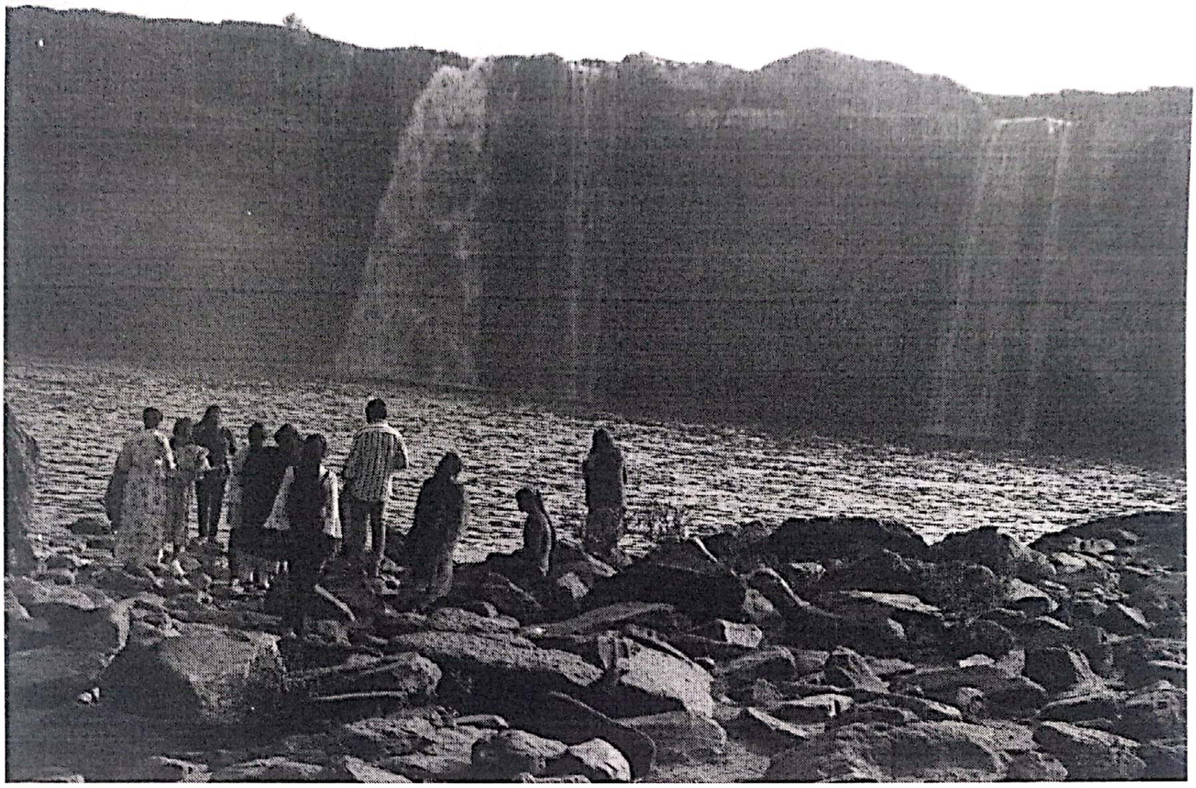

चित्रकोट जलप्रपात के नीचे का मनोरम दृश्य

Scanned with CamScanner

चित्रकोट जलप्रपात के रिसार्ट के सामने मैदान में प्रातः का फोटो

चित्रकोट जलप्रपात की बोंटिग स्थल

Scanned with CamScanner

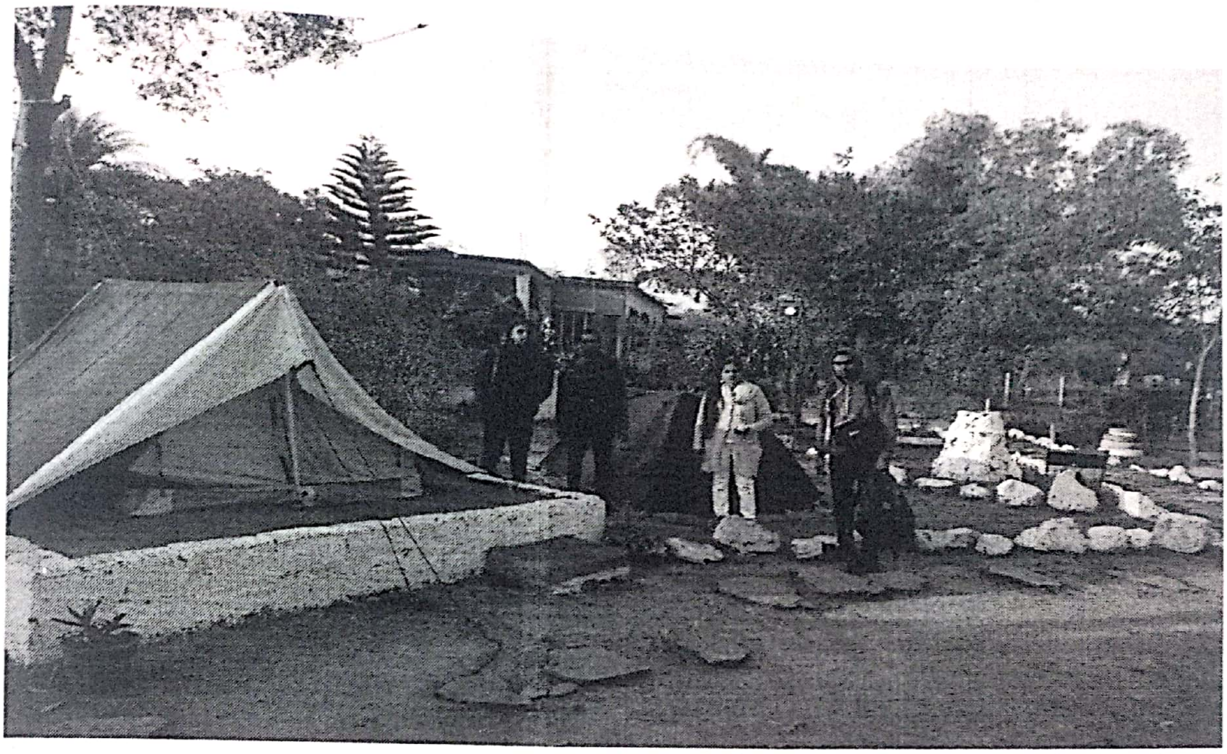

चित्रकोट रिसार्ट

मां दंतेश्वरी मंदिर, दंतेवाडा

Scanned with CamScanner

आभार

इस महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य श्री एस.आर. वड्डे को जिन्होने छात्र हित को ध्यान में रखते हुए उन्होने छात्र/छात्राओ को एक दिवसीय भौगोलिक भ्रमण करने हेतु अनुमति प्रदान किए इस हेतु उन्हें सादर धन्यवाद, साथ ही हमारे महाविद्यालय के शैक्षणिक भ्रमण का नेतृत्व करने वाले अधिकारी/कर्मचारी (श्री टीकेश्वर सिंह मरकाम, श्री रमेश कुमार लहरे सहायक ध्यापक राजनीति विज्ञान, श्री मनोहर दास जोशी अतिथि व्याख्याता हिन्दी , डॉ. खेमप्रभा अतिथि व्याख्याता, श्री रामेश्वर मण्डावी अतिथि व्याख्याता वाणिज्य) नेतृत्वकर्ता, मार्गदर्शक एवं पालक के रूप में उपस्थित थे। इस भौगोलिक भ्रमण में हमारे महाविद्यालय के छात्र 15/छात्रा 28 कुल 43 (अल्का सिन्हा, लक्ष्मी साहू, तारिणी निशाद, यामिनी साहू, हूमेन्द्र साहू, मधु साहू, दिनेश्वरी साहू, विद्या साहू, केश कुमार, योगेश तारक, नेहा साहू, भागवती निशाद, हर्स साहू, रोशनी साहू, भोजकुमारी चकधारी, विद्या साहू, रीमा सेन, दीपक सेन, रेणुका साहू, नेहा साहू, धात्री ध्रुव, द्विती देवांगन, पोखराज ध्रुव, यमन साहू, ओमप्रकाश साहू, मजु साहू, ममता साहू, पायल सोनी, मोनिका कंसारी, नीरा निशाद, जान्हवी देवांगन, सुनीता साहू, गजेन्द्र साहू, कुणाल यादव, राजकुमार साहू, त्रिभुवन साहू, इन्दू साहू, दिव्या

Scanned with CamScanner

साहू, मोहनी साहू)सम्मिलित थे। उक्त सभी ने शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण को सफल बनाने में अपनी –'अपनी भूमिका निभाई इस हेतु सभी को आभार।

Scanned with CamScanner